टंडनजीका अिस्तीफा

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाअी देसाअी अंक २९

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १५ सितम्बर, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

विनोबाकी तेलंगाना-यात्रा

१

१४ अप्रैल : गोपुरी

सर्वोदय-सम्मेलनका अुद्घाटन करते समय विनोबाजीने न सिर्फ भारतवासियोंके लिअे, अपितु सारे संसारके लिअे अेक संदेश दिया — "अंतःशुद्धिर्बहिःशुद्धिः श्रमः शांतिः समर्पणम्।" यह मंत्र सहज स्फूर्त नहीं है। विनोबाका अपना अब तकका जीवन अिस सर्व-योग-समन्वय-कारी साधनासे ओतप्रोत ही रहा है। अनुभवमें से और बरसोंकी तपस्यामें से हमारे ऋषि-मुनियोंको मंत्र स्फुरते थे, अिसीलिअे वे द्रष्टा कहलाते थे। विनोबाजीके अुस संदेशमें भी अैसा अनुभव-जन्य दर्शन प्रगट हो रहा था। तेलंगानाकी यात्रा अिस कार्यक्रमका अेक प्रयोग ही था। विनोबाजीके मनमें अिस यात्राका संकल्प वर्धासे चलते वक्त ही हो चुका था और यही वजह है कि अुन्होंने लक्ष्मी-नारायण मंदिरकी अपनी बिदाअीवाली सभामें साथियोंसे कहा था: "संभव है यह मुलाकात हमारी आखिरी मुलाकात हो।" अुनके अुस अेक वाक्यने सबके हृदयोंको हिला दिया था। तेलंगानाकी यात्राका संकल्प विनोबाजीके सिवा और कोअी नहीं जानता था। अिसलिअे "संभव है यह मुलाकात हमारी आखिरी मुलाकात हो" वाले अुनके अुस वाक्यको समझना कठिन था। पर जब यात्राका प्रारंभ हुआ, तो अुसकी संभाव्य दिक्कतोंका खयाल करके मुझे अुनके अुस वचनकी यथार्थता अधिकाधिक स्पष्ट दिखाअी देने लगी।

हैदराबाद पहुंचने पर आगेका कार्यक्रम तय हुआ। तेलंगानाकी परिस्थितिके बारेमें काफी गंभीरताकी बातें सुन रखी थीं। पुलिसके संरक्षणके बिना वहां किसीका जाना संभव नहीं बताया जाता था। परंतु शांति-सेनाके दूतके लिअे सिवा अेक अीश्वरके और किस संरक्षणकी आवश्यकता होती है? अिसलिअे जब हैदराबाद राज्य सरकारने संरक्षण आदिके बारेमें पूछा, तो विनोबाजीने स्पष्ट सूचना दी कि, 'हथियारबंद या बिना हथियार, वर्दी या बिना वर्दी किसी प्रकारके संरक्षणका सवाल ही नहीं अुठता।' बल्कि जिस मिशन पर विनोबाजी निकले थे, अुस दृष्टिसे किसी सरकारी आदमीका साथ न रहना ही अधिक अच्छा माना गया। अुन लोगोंने भी अिसे स्वीकार किया।

साथियोंमें से कौन-कौन साथ चलें, यह सवाल अुठा। वर्धासे शिवरामपल्लीवाली यात्राकी बात और थी। वहां दो-चार कार्य-कर्ता कमी-बेश साथ रहे, अुसमें कोअी हर्ज नहीं था। पर यहां तो देशके त्रस्त और पीड़ित हिस्सेमें जाना था, अतः कमसे कम लोगोंको साथ रखना तय हुआ। वे भी कामकी दृष्टिसे आवश्यक मालूम हुअे अिसलिअे, वरना विनोबाजीके लिअे अकेले भी निकल पड़ना कोअी असंभव नहीं था। अिसलिअे बहुतसे लोगोंको और बहुतसी वस्तुओंको छोड़ देना पड़ा।

आर्यनायकम्‌जीका सुझाव था कि पुनाअीसे लेकर बुनाअी तककी सारी प्रक्रियाओंका प्रदर्शन साथ रखा जाय। शिवरामपल्ली तककी यात्रामें हमें अिसकी आवश्यकता भी महसूस हुअी थी, लेकिन अब सब विचार छोड़ देने पड़े। तय यही रहा कि हम लोग जो नित्य कताअी करेंगे, अुसीसे समाधान मानना होगा।

लोगोंने यह भी सुझाया कि आप किसी व्यक्ति-विशेषके यहां नहीं ठहरियेगा, कम-से-कम धनवानों, जमींदारों या देशमुखों आदिके यहां तो बिलकुल न ठहरियेगा। क्योंकि अुससे आपके बारेमें गलत-फहमी होगी और कार्यसिद्धिमें बाधा पहुंचेगी। कांग्रेसवालोंके यहां भी न ठहरनेकी बात कम्युनिस्टोंके साथ सहानुभूति रखने-वालोंने सुझायी, परंतु अिस तरहके किसी भी सुझावको माननेसे विनोबाजीने अेकदम अिनकार कर दिया। "हम तो कहीं भी ठहर सकते हैं। जो ठहरायेंगे, अुन्हींके पास ठहर जायेंगे। मनुष्य-मनुष्यमें हम अैसा कोअी भेद नहीं करना चाहते। न सूर्य करता है, न हवा करती है। नारद भी तो सब जगह जाते थे।" 'यहां ठहरें, वहां न ठहरें' वाली छूतछात विनोबाके स्वभावको जंचती नहीं। जहां सर्वत्र नारायणका ही दर्शन होता है, वहां आप-पर कैसे?

अिस तरह तेलंगानाकी यात्रा शुरू हुअी। अुस दिन रामनवमीकी तिथि सहज ही पड़ती थी। वह तो अेक शुभ संकेत था!

लेकिन हैदराबाद पहुंचनेके पहले बीचमें अेक और जगह ठहरना था — श्री लोचनदासभाअीकी गोपुरीमें। लोचनदासजीने वर्धामें भी कुछ समय तक गोसेवाके कामका अनुभव लिया है और जबसे हैदराबाद लौटे हैं, गोसेवाके काममें ही रम गये हैं। हैदराबादसे दस मील दूर गोलकुंडा किलेके पास लोचनदासजीको कुछ जमीन मिली है, जिस पर अुन्होंने गोसेवा मंडलकी स्थापना करके गोसेवाका कार्य शुरू किया है। आज यहां भी दिन भर कअी लोग मिलने आये। अन्न मंत्री, बै० विनायकरावजी, अन्य सरकारी अधिकारी, कांग्रेसके कार्यकर्ता, रचनात्मक कार्यकर्ता, सभी थे। विविध विषयों पर चर्चा हुअी। श्रीमती ज्ञानकुमारी हेड़ाके सहयोगसे यहां अेक कस्तूरबा केंद्रकी स्थापना भी की गयी। विनोबाको यहां भी बहुत अच्छा लगा। शामकी प्रार्थनामें अुन्होंने कहा:

भाअी लोचनदासजी यहां जो गोसेवाका काम कर रहे हैं, अुसे देखनेकी अिच्छा तो बहुत दिनोंसे थी, लेकिन सिर्फ अिसी अेक कामके लिअे आना संभव नहीं था। सर्वोदय-संमेलनके सिलसिलेमें शिवरामपल्ली आना हुआ, तो आज यहां भी आनेका मौका मिल गया।

यहां गायोंकी सेवाका जो काम शुरू हुआ है, वह वास्तवमें आप लोगोंकी ही सेवाके लिअे है। गायके बिना मनुष्यका जीवन चल नहीं सकता अैसी हालत आज है। बच्चोंको, बूढ़ोंको, बीमारोंको गायके दूधकी जरूरत है। अिस प्रकार गाय हमारे कुटुंबमें दाखिल हो गअी है। गायकी तरह बैल भी हमारे परिवारमें दाखिल हो गया

www.vinoba.in

है। दोनोंसे हम पूरा काम लेते हैं और अंत तक अुन्हें संभालते भी हैं। अिस तरह यहां यह गोसेवाका काम शुरू हुआ है।

अिस गोसेवा द्वारा आसपासके देहातोंकी सेवा की जायगी। अिन गायोंके लिअे जो अनाज, घास आदि चाहिये वह खरीदा नहीं जायेगा, वह यहीं पैदा किया जाना चाहिये। दूधका पहला अुपयोग यहांके बालकोंके लिअे, यहां रहनेवालोंके लिअे होना चाहिये। बचा हुआ दूध शहरमें जायेगा। जो सेवक यहां काम करते होंगे, वे और आपके गांवके लोग दोनों समान रूपसे काम करेंगे। जो अनाज बोयेंगे, वह खानेके काम आवेगा। तिल बोकर यहीं अुससे तेल बना लेंगे। अिस तरह गाय, बैल और मनुष्य तीनोंका अुत्तम सहकार हुआ, तो जो कार्यकर्ता यहां रहेंगे, अुन्हें बाहरसे कुछ नहीं मंगाना पड़ेगा।

यहां कोअी बीमार पड़े, तो अुसकी सेवा भी यहीं हो सके, जिसके लिअे कुछ वनस्पतियां भी यहां अुपजायेंगे। कार्यकर्ताओंके बालकोंकी पढ़ाअी भी गांवके लड़कोंके साथ यहीं होनी चाहिये। गांववाले और कार्यकर्ता अिस तरह सब अेक दूसरेमें घुलमिल जावेंगे। शामको प्रार्थना होगी, तो गांववाले भी अुसमें शरीक रहेंगे। भजन हिन्दी गाये जायेंगे और तेलगू भी।

गांवोंकी सेवा करना और गांवोंको स्वावलंबी बनाना, यह दृश्य यहां दिखाअी देना चाहिये। यहांके कामसे आसपासके लोगोंको प्रेरणा मिलनी चाहिये। अुन गांववालोंको भी बाहरके पैसेकी आवश्यकता कम रहे, अैसा होना चाहिये। यह तभी संभव होगा, जब यहांके कार्यकर्ता और गांववाले अेक दूसरेसे अेकरूप हो सकेंगे।

श्रीमती ज्ञानकुमारीके प्रयत्नोंसे यहां आजसे कस्तूरबा केन्द्र भी शुरू हो रहा है। यानी बच्चोंकी सेवा, स्त्रियोंकी सेवा, यह समझिये कि अब यहां समग्र सेवा होनेवाली है। और ये जो कार्यकर्ता लोग हैं, वे आपके सेवक यानी नौकर हैं, सेवाके लिअे ही यहां आये हैं। लोचनदासजीको लोग कहते हैं कि 'आप शहरसे दस मील दूर चले गये हैं। शहरमें रहते तो अच्छा होता।' मेरा कहना है कि शहरमें तो सेवा करनेवाले बहुत पड़े हैं। गांवकी सेवाकी जरूरत है। लोग कहते हैं, कहां जंगलमें जा पड़े हैं। मैं कहता हूं, जंगल तो शहरमें है, क्योंकि जहां जंगली लोग रहते हैं वहां जंगल होता है। जहां लोग अेक दूसरेको पहचानते नहीं, जानवर भी जानवरको खाने दौड़ते हैं, वह जंगल नहीं तो क्या है? अिसलिअे अुन लोगोंसे कहो कि भगवानके अत्यंत प्रिय भक्त जो देहातोंमें बसे हुअे हैं, अुनकी सेवाके लिअे हम देहातमें जा रहे हैं।

लोचनदासजीके निमित्त सबको देहातोंकी सेवाकी प्रेरणा देकर विनोबा दूसरे रोज सवेरे, यानी रामनवमीके दिन अपनी तेलंगानाकी यात्राके लिअे रवाना हो गये।

दा० मूं०

नवजीवनके प्रकाशन

वर्धा और नागपुरमें हमारे सारे प्रकाशनोंकी बिक्रीकी व्यवस्था अब कर दी गयी है। अुसके अनुसार हिन्दी, गुजराती, मराठी और अंग्रेजीके हमारे सब प्रकाशन आगेसे नीचेके पतों पर मिल सकेंगे :

१. स्वराज्य भंडार, **वर्धा**

२. गोसेवा चर्मालय, **नागपुर**

जी० देसाअी
व्यवस्थापक, नवजीवन कार्यालय

शिवरामपल्लीमें विनोबा

१३

ता० १२–४–'५१, प्रसूति-गृहका अुद्घाटन :

शिवरामपल्ली गांवमें आज विनोबाने अेक प्रसूति-गृहका अुद्घाटन किया। गृहके संचालकने शुरूमें विनोबाजीको धन्यवाद दिया कि अुन्होंने अिस प्रसूति-गृहका अुद्घाटन करना स्वीकार किया। अुन्होंने श्री रामकृष्णजी धूतको भी धन्यवाद दिया कि अुनके प्रयत्नोंसे शिवरामपल्लीमें सर्वोदय-सम्मेलनका यह अितना बड़ा आयोजन हो सका और अुसके निमित्त विनोबाजीका आगमन भी संभव हो सका। प्रसूति-गृह जातिपांतिके भेदभाव बिना शिवरामपल्लीमें तथा अिर्दगिर्दके गांवोंकी सेवा करेगा।

प्रसूति-गृहका अुद्घाटन करते हुअे विनोबाने कहा :

यहां शिवरामपल्लीमें सर्वोदय सम्मेलनके निमित्त हम लोग आये थे। संमेलनमें काफी चर्चायें हुअीं। और अब सारे लोग अपनी-अपनी जगह चले गये—यही विचार लेकर कि हमको सबकी सेवामें लग जाना है। कल ही वह सम्मेलन खतम हुआ और आज यहां यह सेवाका काम शुरू हुआ। यह बहुत अच्छा आरंभ है। दीखनेको यह अेक छोटासा काम दीखता है, पर यह छोटा नहीं है। सेवाका अेक काम यहां सर्वोदय-केन्द्रमें पहिलेसे चल रहा है। अुस कामसे अिस बीजको भी पानी मिलेगा। अिसका भी बड़ा दरख्त बनेगा और अुसकी छाया सब लोगोंको मिलेगी।

यहां यह सर्वोदय-केन्द्रका काम कैसे शुरू हुआ, यह तो आप लोग जानते ही हैं। श्री रामकृष्ण अवधूतने यहां यह सेवाकार्य शुरू कर दिया है। सब लोग अुन्हें धूत कहते हैं। पर मैं अुन्हें अवधूत कहता हूं। सब कुछ छोड़छाड़कर वे यहां आ बैठे हैं। जहां भक्त बैठ जाता है, वहां भगवानको दौड़कर आना पड़ता है। शिवरामपल्लीमें सम्मेलन अिसीलिअे हुआ कि अेक भक्त यहां आकर बैठ गया है। अिस घटनासे हम काफी सबक ले सकते हैं। जहां अेक भी सच्चा भक्त बैठ जाता है, वहां लक्ष्मी सब तरफसे दौड़ आती है।

यह भी खुशीकी बात है कि यह सूतिकागृहका काम अिस देहातमें शुरू हो रहा है। हिन्दुस्तानमें बड़े-बड़े शहर भी हैं, पर अुसका जिगर, कलेजा, दिल देहातोंमें है। अिसलिअे देहातोंमें ही हम सब लोगोंको जाना है। देहातके लोगोंके बल पर ही हम सब जिन्दे रहते हैं। अुनको अगर हम कुछ थोड़ासा देते हैं, तो अुनसे हम कमाते भी बहुत हैं। खोते तो हम कुछ भी नहीं। देहातके लोग अुपकारको समझते हैं। थोड़ासा भी कोअी अुन पर अुपकार करता है, तो अुनका दिल भर आता है। दरअसल प्यार तो अुनके दिलमें भरा होता है। जरासा मौका मिला कि वह अुमड़ आता है। अैसी अहसानमन्द जनता होती है देहातोंकी। आज आप अुनकी सेवाका आरंभ कर रहे हैं, यह अच्छी बात है। अैसे जितने काम देहातोंमें शुरू किये जा सकें करने चाहियें।

परमेश्वर तो अुन लोगोंसे बेजार है, जो अुसका नाम लेते हैं पर काम नहीं करते। अुसका काम क्या है? अुसे कामकी जरूरत क्यों है? वह तो पूरी तरह बेदरकार है। लेकिन जो लोग अुसके बच्चोंकी सेवा करते हैं, वे अुसीकी सेवा करते हैं। जो लोग अैसा नहीं करते, दिलमें रहम नहीं रखते, अुनसे सचमुच परमेश्वर बेजार है। अगर कहीं अुसका नाम न भी लिया जाता हो—छोटे बच्चे मांका नाम कहां ले पाते हैं—परंतु अगर काम अुसीका चलता हो, तो भी वह खुश होता है। और वह खुश होता है तो अुसकी पहचान भी हमें होती है, हमारे दिलमें तसल्ली होती है। जात-पांतके भेदके बिना जहां अैसी सेवाका काम होता है, वहीं सच्चे मंदिर और मस्जिद हैं। परमेश्वरके निवासकी वही जगह है।

आप लोगोंने सोचा तो यह था कि यहां बच्चोंकी सेवा की जाय। हिन्दू धर्ममें सबसे बढ़कर सेवा बालकृष्णकी मानी जाती

www.vinoba.in

है। बालकृष्ण यानी छोटे बच्चेके रूपमें भगवान। परमेश्वरका न तो रूप है, न नाम! पर हम अपने संतोषके लिअे नामरूप देते हैं। वैसे सोचें तो दुनियाके सारे नामरूप अुसीके हैं, या तो कोअी नामरूप अुसका नहीं है। मनुष्य अुसका सहारा लेकर अपनी जिंदगीको शुद्ध और पवित्र बनाता है। तो बालकृष्णके रूपमें यानी बच्चोंके रूपमें भगवानकी सेवा, यह अेक बड़ी प्रिय भक्ति भक्तोंमें चलती है। अिसलिअे यहां आपने यह जो बच्चोंकी सेवा शुरू की, वह सब सेवामें श्रेष्ठ सेवा है। वैसे सेवा सेवामें क्या फर्क हो सकता है? परंतु यदि फर्क करना ही हो, तो कहा जायगा कि बच्चोंकी सेवा सबसे श्रेष्ठ सेवा है।

लेकिन बच्चोंके साथ मातायें तो आ ही जाती हैं। तो मूल संकल्प तो बच्चोंकी सेवाका है, परंतु आपको माताओंकी भी सेवा करनी है।

कस्तूरबा ट्रस्टके काममें अिससे बिलकुल अुलटा हुआ। वहां माताओंकी सेवाका संकल्प करके काम शुरू किया गया, लेकिन फिर सोचा कि बच्चोंकी सेवाके बिना माताओंकी सेवा कैसे हो सकती है। अिसलिअे बच्चोंकी सेवा भी शुरू की गअी। यहां आपने बच्चोंका सोचा तो माताओंकी सेवाके बारेमें भी सोचना आवश्यक हो गया है। माता बच्चेसे कभी अलग नहीं हो सकती। पिता शायद अलग हो भी जाय। जानवरोंमें तो यह भी पाया गया है कि पिता बच्चोंको पहचानता तक नहीं। जानवरोंमें भी प्रेमका नमूना पाया जाता है, परंतु वहां पिता अलग होने पर भी मां अलग नहीं हो सकती।

जिसने बच्चेको 'मां' दी, अुसने माताके साथ दूधका भी अितजाम कर दिया। यह कितनी बड़ी दया है! कितना बड़ा रहम है! मुसलमानोंमें परमेश्वरको हमेशा रहमान और रहीम कहते हैं। वही दयालु है, वही कृपालु है। परमेश्वरके अनेक नामोंमें से किन-किन नामोंका जप करें? परंतु दयालु, कृपालु अैसे नाम सहज सूझते हैं।

अेक जगह कुरानमें आया है कि "तू कभी अल्लाका, कभी रहमानका नाम लेता है। तो क्या ये दोनों अलग-अलग हैं?" तो मोहम्मदको समझाना पड़ा कि अल्ला और रहमान दोनों नाम अेक ही परमेश्वरके हैं। जो पूर्ण दयालु है, वही परमेश्वर है। जो परमेश्वर है, वह पूर्ण दयालु है। हम अगर अपनी दयाको बढ़ाते चले जायं — कलसे आज अधिक, आजसे कल अधिक — अिस तरह यदि हमारी दया बढ़ती जाय, तो अेक दिन अैसा आयगा कि जब शायद यह शरीर न टिक सके और हम परमेश्वरके नजदीकसे नजदीक पहुंच जायं। पूरी दयाका नाम ही परमेश्वर है। दर असल हम अपना दिल ढूंढें, तो हमें दिखेगा कि वह बहुत सख्त है। हमने अनेकोंका अहसान पाया है। बचपनसे कितनोंने हम पर अहसान किया है, कितना भर-भरकर हमने पाया है। जिसने हमें अितनी नियामतें दीं, और निरंतर देता ही रहता है, वह परमेश्वर कितना अपार दयालु है! फिर भी हमारा दिल पसीजता नहीं। हम पत्थरके समान रहते हैं। तो भाअियो, अैसे ही सेवाके काम हमें करने चाहियें और अिस पत्थरवाले दिलको दिन प्रतिदिन मृदु बनाते रहना चाहिये। अुसे मुलायम करना चाहिये। जहां वह मुलायम होगा, वहां वह अुदार भी हो जायेगा। और फिर अपने सीनेमें हम देखेंगे, तो अुसकी तसवीर हमें दीख पड़ेगी। फिर हमारा शरीर हमारा नहीं रहेगा, वह भगवानका मंदिर बन जायगा। हमारी आंख हमारी आंख नहीं रहेगी, वह दया और रहमसे रोशन बनेगी। हमारे हाथ, हमारा मन, सब दयासे परिपूर्ण रहेगा। वाणीसे कोअी शब्द निकलेगा, तो वह सबको सुख देनेवाला, किसीके दिलको न चुभनेवाला तथा हरअेक हृदयको अपनी तरफ खींच लेनेवाला ही निकलेगा। वाणीसे निकलनेवाला शब्द शब्द नहीं होगा, अमृतबिंदु होगा। यह सब अनुभव तब आ सकता है, जब हम सेवाका कार्य करते चले जायंगे और अुसमें अपनेको भुला देंगे।

मेरे प्यारे भाअियो! मैंने बहुत कह दिया। कहना आसान है, करना कठिन है। परंतु हमें तो करना है। अुसके लिअे भगवान हमें आवश्यक बल दे, यही प्रार्थना है। आपका अहसान है कि आपने मुझे बुलाया। परमेश्वरने चाहा था कि अिस कामके आरंभमें ही मैं आपको मानसिक सहकार दे सकूं। आप सबको प्रणाम करके मैं समाप्त करता हूं।

* * *

ता० १३-४-'५१:

आज शिवरामपल्लीका आखिरी मुकाम था। अेक हफ्ता यहां रहे। यहांके कामका निरीक्षण तो विनोबाने पहले रोज ही कर लिया था। पिछले सात दिनोंसे विनोबा अुस केन्द्रके कार्यकर्ताओंके संपर्कमें भी आ चुके थे। कार्यकर्ता चाहते थे कि बिदाअीसे पहले विनोबा आशीर्वादके रूपमें दो शब्द अुन्हें कहें। और विनोबाके लिअे भी यह संभव नहीं था कि बिना कुछ कहे वहांसे बिदा लें। अिसलिअे अुन्होंने कहा:

"अेक सप्ताह मैं यहां रहा। मुझे काफी अच्छा लगा। संमेलनकी स्मृति यहां कृतिमें दीख पड़नी चाहिये। लोगोंको यह कहनेका मौका नहीं मिलना चाहिये कि शिवरामपल्लीके संमेलनकी स्मृति अितिहासमें रह गअी। बल्कि यहां जो बीज बोया गया है, अुसके फूलफल, अुसकी छाया लोगोंको मिलनी चाहिये। बोधिवृक्षके समान यहांसे सबको ज्ञान मिलना चाहिये।

"कम्युनिस्टोंमें या अन्य लोगोंमें, जो अहिंसामें नहीं मानते, जितना भाअीचारा होता है, अुससे ज्यादा भाअीचारा हमारे कार्यकर्ताओंमें आपसमें दीख पड़ना चाहिये। हिंसामें माननेवाली जमातें भी आपसमें प्रेमसे रहती हैं, तो हम तो दुश्मनोंको भी प्रेमसे जीतना चाहते हैं। अिसलिअे हमारे बीच नित्य निरंतर प्रेमभाव बढ़ता रहना चाहिये। हमको आपसमें अभिन्नताका अनुभव होना चाहिये।"

स्वयंसेवक भाअियोंने भी आठ दिन तक बाहरसे आये हुअे सैकड़ों कार्यकर्ताओंकी परिश्रमसे सेवा की थी। बिदा होनेसे पहले अुन्होंने विनोबासे संदेश चाहा।

विनोबाने कहा:

"आप लोगोंने रोज अच्छा काम किया है, मगर अितनेसे हमें संतोष नहीं हो सकता। अिन दिनों आपने सर्वोदयके बारेमें जो कुछ समझा हो, अुसके अनुसार अमल कीजिये। आपमें से बहुतसे विद्यार्थी हैं। बहुतसे अपना-अपना कारोबार सम्हालते हुअे स्वयं-सेवकका काम करते हैं। यह अच्छा है। अिसी तरह आपको अपना-अपना काम करते हुअे सर्वोदयका काम भी करना चाहिये। देशमें अिस वक्त काम करनेके लिअे बहुत बड़ा क्षेत्र है। और हैदराबाद शहरमें तो काम करनेका क्षेत्र बहुत बड़ा है। यहां दुःखी लोग बहुत हैं। आप लोग अपना धंधा करते हुअे अेक घंटा भी अपने गांवकी सेवाके लिअे दे सकें तो दें। रोज अेक घंटा न दे सकें, तो हफ्तेमें अेक रोज दें। यहां कअी अैसे अनुभवी लोग हैं, जिन्हें मैं कहूंगा कि आपकी सेवाओंका अुपयोग करें। अिस तरह जो लोग अपनी सेवा देना चाहते हैं, वे हाथ अुठायें।"

सबने हाथ अुठाये।

"आपने तो सबने ही हाथ अुठा दिये। बड़ी सेना हो गअी। यह अच्छा हुआ। आपके कामका आयोजन करनेके संबंधमें मैं यहांके बुजुर्गोंसे कहूंगा।"

अिस तरह अनेक सुखद स्मृतियोंको लेकर ता० १४ की सवेरे विनोबा शिवरामपल्लीसे हैदराबादके लिअे रवाना हुअे। कुंकुम-तिलक, श्रीफल, सूतांजली, आदि आदरसूचक शुभ संकेतोंसे शिवरामपल्लीके भाअी-बहनोंने विनोबाको बिदा किया। "विनोबा फिर कब आ सकेंगे?" — बस यही भाव अुस समय सबके मनमें अुठ रहा होगा।

दा० मूं०

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

१५ सितम्बर १९५१

टंडनजीका अिस्तीफा

परिस्थितियोंके कारण टंडनजीके सामने कांग्रेसके अध्यक्ष-पदसे अिस्तीफा देने और कांग्रेस महासमितिके सामने अुसे स्वीकार करनेके सिवा और कोअी विकल्प नहीं रह गया था। अिस सारे समयमें टंडनजीका व्यवहार वैधानिक दृष्टिसे और नैतिक दृष्टिसे बिलकुल शुद्ध और प्रामाणिक था। वर्किंग कमेटीके सदस्यों द्वारा "दबावके कारण" दिये गये अिस्तीफोंको मंजूर करनेके बजाय कांग्रेसका अध्यक्ष-पद छोड़ देना पसन्द करनेके लिअे अुनकी बड़ीसे बड़ी प्रशंसा की जानी चाहिये। मेरी नम्र रायमें गलती अुन्हें पिछले साल अुस पद पर बैठानेमें ही हुअी थी।

अिस विवादमें प्रगट रूपसे जवाहरलालजीकी जीत हुअी है। अब वे अपनी अिच्छाके अनुसार वर्किंग कमेटीकी पुनर्रचना कर सकेंगे। हम आशा करें कि यह कदम वे जिस तरह चाहते हैं, अुस तरह कांग्रेसको नवजीवन प्रदान करेगा। अगर कांग्रेस महासमितिने हार्दिक अिच्छासे अुन्हें अध्यक्ष चुना हो और अुनके विचारोंको बुद्धिपूर्वक स्वीकार किया हो, तो ही यह संभव होगा। अगर अुसने मजबूर होकर या सैद्धान्तिक दृष्टिके अलावा दूसरे किसी खयालसे अुन्हें अपना नेता स्वीकार किया होगा, तो यह आशा दिवास्वप्न ही सिद्ध होगी।

यह अेक गंभीर स्थिति है। जब कोअी संगठन योग्य नेताओंकी परम्पराको जन्म देना बन्द कर देता है और अपने प्रथम नेताकी सेवाओंको छोड़ देनेसे डरता है, तब वह बूढ़ा और कमजोर हो जाता है। अैसी कमजोरी तब पैदा होती है, जब वह महत्त्व-पूर्ण स्थानों पर कमजोर या चापलूस अनुयायियोंको बनाये रखता है और अैसे लोगोंसे पिंड छुड़ा लेता है या अुन्हें निकाल देता है, जो अपने नेताओंकी हिम्मतके साथ तब तक अीमानदारीसे टीका करते रहते हैं, जब तक अुन्हें अुसके सही होनेका विश्वास नहीं हो जाता।

अैसे अनुयायियोंके साथ न तो नेहरू-सरकार और न कांग्रेस मजबूत बनकर राष्ट्रके लिअे मददगार हो सकती है। ज्यों ही वे देखेंगे कि नेहरूका प्राबल्य या प्रभाव घट गया है, त्यों ही वे अुन्हें छोड़ देंगे और दूसरे अुदय होनेवाले सूर्यकी पूजा करने लगेंगे — भले सिद्धान्तों और विचारोंकी दृष्टिसे वह नेहरूके बिलकुल विरुद्ध ही क्यों न हो। अिसी तरहके अनुयायियोंसे नेताका और संस्थाका अेकदम पतन हो जाता है।

मुझे आशा है कि जवाहरलालजी वर्किंग कमेटीकी पुनर्रचनामें अैसे ही लोगोंको स्थान और प्रोत्साहन देंगे, जो अुनकी नीतिका अनुमोदन करनेसे पहले अुनके हर कदमको समझानेकी अुनसे मांग करेंगे और शासनकी भलाअीके लिअे कभी-कभी अुन्हें कड़ी बातें भी कहनेमें नहीं चूकेंगे। कोअी संगठन या संस्था अुसी हद तक सजीव बनी रहती है और अेकके बाद दूसरा नेता देती है, जिस हद तक वह योग्य और बुद्धिमान मनुष्योंको निःसंकोच अपने विचार प्रगट करनेकी और नेताकी रायका भी विरोध करनेकी स्वतंत्रता देती है।

वर्धा, १०-९-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

अंग्रेजीको नमस्कार

जैसा कि 'हरिजनसेवक' के कालमोंमें पहले कहा गया है, बम्बअी सरकारने राज्यकी विभिन्न युनिवर्सिटियोंको लिखा कि वह युनिवर्सिटी शिक्षणका माध्यम तय करनेके अिस महत्त्वपूर्ण मामलेमें सरकार द्वारा प्रस्तावित कार्रवाअी और नीतिमें अुनका हार्दिक सहयोग चाहती है। सरकारका पत्र शुरूमें ही माध्यमिक शालाओंमें अंग्रेजी और हिन्दीके शिक्षणके संबंधमें अुसकी नीति बताता है। जैसा कि हम जानते हैं, "माध्यमिक शालाओंके पहले तीन दर्जोंमें अंग्रेजीकी पढ़ाअी" बन्द कर दी गअी है; और पत्रमें जोड़ा गया है कि "१९५१ से केवल आठवें दर्जेमें ही अंग्रेजीकी पढ़ाअीकी अिजाजत दी जा सकेगी।" दूसरी तरफ माध्यमिक शालाओंके अिन पहले तीन दर्जोंमें हिन्दी दाखिल की गअी है और सरकारका यह कहना है कि "११वें दर्जे तक हर साल अुसकी पढ़ाअी आगे बढ़ाअी जायगी।"

अिसके आगे सरकारी पत्र यह दलील पेश करता है कि:

> "जो विद्यार्थी ११वें दर्जेकी पढ़ाअी पूरी करके मार्च १९५५ में अेस० अेस० सी० अी० (माध्यमिक शालान्त परीक्षा) में बैठेंगे, वे अनिवार्य भाषाओंके रूपमें हिन्दीकी सात साल तक और अंग्रेजीकी सिर्फ चार या पांच साल तक पढ़ाअी कर चुके होंगे। अिस तरह १९५५ में अेस० अेस० सी० अी० पास करनेवाले विद्यार्थियोंकी बहुत बड़ी तादादको अंग्रेजीके बनिस्बत हिन्दीका ज्यादा अच्छा ज्ञान होगा।"

और अिसलिअे अन्तमें पत्रमें कहा गया है:

> "अिस कारणसे १९५५ से आगे युनिवर्सिटी शिक्षणके माध्यमके तौर पर अंग्रेजीको चालू रखना शैक्षणिक दृष्टिसे गलत होगा।"

यह बयान अपने आपमें तो सही है। हम केवल यह कामना ही कर सकते हैं कि सरकारकी ये अुत्साहभरी आशायें पूरी हों। क्योंकि यह कहना सच नहीं है कि "अंग्रेजीकी पढ़ाअीकी सिर्फ आठवें दर्जेमें ही अिजाजत दी गअी है", न यही सच है कि ५वें, ६ठे और ७वें दर्जेमें सभी विद्यार्थियोंको हिन्दी पढ़ाअी जाती है। सब कोअी जानते हैं कि सरकारने ७वें दर्जेमें **वैकल्पिक** अंग्रेजी पढ़ानेकी अिजाजत दे दी है। अिससे अंग्रेजीके संबंधमें खुद सरकारकी नीतिको बड़ी हानि पहुंची है और ८वें दर्जेके कामकाज, प्रगति और कार्यक्षमताको धक्का पहुंचा है — जिसमें आज ७वें दर्जेमें अेक साल तक अंग्रेजी पढ़े हुअे और न पढ़े हुअे दोनों तरहके विद्यार्थी आते हैं। फिर कुछको छोड़कर हमारी प्राथमिक शालाओंके ५वें, ६ठे और ७वें दर्जेमें हिन्दी नहीं पढ़ाअी जाती। वह प्राथमिक शिक्षणमें अनिवार्य नहीं है। अिस तरह जहां तक माध्यमिक शालाओंके संचालनसे संबंध है, अिन दोनों कारणोंसे ८वें दर्जेकी शुरुआत बड़े बुरे ढंगसे होती है। निश्चित रूपसे अिसका हमारी माध्यमिक पाठशालाओंके कामकाज और प्रगति पर बुरा असर पड़ेगा। अुच्च शिक्षाके लिअे योजना बनाने या सुझाव रखनेसे पहले सरकार अिन दोषोंको दूर कर दे तो अच्छा होगा

अेक दूसरी चीज भी है, जिसे कालेजोंके शिक्षणके लिअे कुछ करनेसे पहले सुधारा जाना चाहिये। जैसा कि हम जानते हैं, प्रादेशिक भाषायें माध्यमिक शिक्षणका माध्यम रहेंगी। फिर अेस० अेस० सी० अी० के नियम विद्यार्थियोंको अंग्रेजीकी जगह हिन्दी लेनेकी अिजाजत देते हैं, यानी विद्यार्थी चाहे तो अंग्रेजी लिये बिना अेस० अेस० सी० अी० पास कर सकता है। लेकिन हमारे संपूर्ण शिक्षा-क्षेत्रमें अंग्रेजीके शासनके अवशेषके रूपमें जो अव्यवस्था आज भी जारी है, वह यह है कि अेस० अेस० सी०

www.vinoba.in

ओ० के प्रश्नपत्र अंग्रेजीमें ही निकाले और विद्यार्थियोंको दिये जाते हैं। और जनता तथा विद्यार्थियोंकी तरफसे बार-बार मांग होने पर भी अिस स्थितिमें कोअी सुधार नहीं होता। यह सुधार बहुत पहले कर दिया जाना चाहिये था। कमसे कम मार्च १९५२ से तो यह कर ही दिया जाना चाहिये। अिसके अलावा, माध्यमिक शालाओंमें कुछ विषय आज भी अंग्रेजी द्वारा ही पढ़ाये जाते हैं। क्या अिस संबंधमें सरकार कोअी आदेश देगी? जिस तरह अस्पृश्यता हमारे संपूर्ण समाजमें व्याप्त हो गअी है, अुसी तरह हमारे संपूर्ण शैक्षणिक, शासन संबंधी और सांस्कृतिक क्षेत्रों पर अंग्रेजीकी प्रभुता रही है। हमारे प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षणमें कोअी बुनियादी और संपूर्ण परिवर्तन किये बिना अुच्च शिक्षणमें अेकाअेक कोअी परिवर्तन सुझाना या अुसकी आशा रखना बेकार है। बेहतर होगा अगर सरकार पहले करनेके कामों पर प्रथम ध्यान दे और शिक्षाके पहले दो दर्जोंकी व्यवस्थामें सुधार कर दे — जो पूरी तरह अुसके नियंत्रण और मार्गदर्शनमें हैं।

अगले अंकमें बम्बअी सरकारके पत्र पर और विचार किया जायगा।

अहमदाबाद, ८-९-'५१ मगनभाअी देसाअी

(अंग्रेजीसे)

स्पष्टीकरण

'हरिजनसेवक' के गये अंकमें कांग्रेसके मसले पर अपना और विनोबाजीका वक्तव्य तथा मेरे वक्तव्यके अुत्तरमें दिया गया श्री पुरुषोत्तमदास टंडनका जवाब और अुस पर अपनी टिप्पणी मैंने प्रकाशित की है। पाठकोंको मेरे वक्तव्य और टंडनजीके जवाबमें कोअी संबंध न होने पर हैरानी होगी। मुझे अुसका स्पष्टीकरण करना चाहिये।

अपने प्रकाशित वक्तव्यके सिवा, मैंने 'नेहरू-टंडन विवाद' शीर्षक अेक लेख भी लिखा था, जो अिस अंकमें प्रकाशित हो रहा है। मैंने जब अुसे तैयार किया, तब तक अितनी देर हो गअी थी कि वह गये अंकमें शामिल नहीं हो सकता था। अिसलिअे मैंने अुसे 'हिन्दुस्तान टाअिम्स' और गुजराती 'जन्मभूमि' को भेज दिया था, ताकि वह अ० भा० कांग्रेस कमेटीके अधिवेशनके पहले प्रकाशित हो जाय। मैंने श्री टंडन और नेहरूको अपने और विनोबाजीके वक्तव्योंके साथ अुस लेखकी अग्रिम कापियां भी भेज दी थीं। श्री टंडनजीने समझा कि वह लेख प्रकाशित हो गया होगा, और अिसलिअे अेकदम अुसके जवाबमें अपना वक्तव्य प्रकाशनके लिअे दे दिया। वह लेख दोनों अखबारोंमें आज ही प्रकाशित हुआ है। अिस तरह लोगोंके सामने टंडनजीका जवाब तो आ गया है, लेकिन वह लेख नहीं आया जो अुसका आधार है।

पाठक देखेंगे कि श्री टंडनजीके जाहिर वक्तव्यमें मेरे 'नेहरू-टंडन विवाद' लेखमें आये हुअे मुद्दोंमें से सिर्फ अेककी ही चर्चा हुअी है। दूसरे अुतने ही महत्त्वके मुद्दे छोड़ दिये गये हैं।

वर्धा, ७-८-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

हमारा नया प्रकाशन

गांधी और साम्यवाद

[श्री विनोबाकी भूमिका सहित]

लेखक: किशोरलाल मशरूवाला

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-४-०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद-९

नेहरू-टंडन विवाद

नेहरू-टंडन विवादसे जो परिस्थिति अुत्पन्न हुअी है, बाहरी तौर पर वह कांग्रेसका अपना मसला है। लेकिन वह बड़ी आसानीसे बढ़ सकती है। और तब वह संपूर्ण देशके लिअे अेक महत्त्वका प्रश्न बन सकती है, जिसके परिणाम देशके बाहर भी होंगे।

मेरा विचार है कि आजादीके बादकी नयी परिस्थितिमें किसी राजनैतिक दलका अध्यक्ष अैसा ही व्यक्ति होना चाहिये, जो संसदका नेता चुना जा सके; और यदि भारतीय संसदमें अुस दलका बहुमत हो, तो जिसे देशका प्रधानमंत्री बननेकी जिम्मेदारी सौंपी जा सके। विधान-सभामें अुस दलका नेता अलग हो और संपूर्ण संस्थाका नेता अलग व्यक्ति हो, यह बात नहीं चल सकती। आजादीके पहलेका यह विचार कि कांग्रेसका अध्यक्ष कांग्रेसका निर्वाचित नेता होता था और प्रादेशिक सरकारोंके प्रधानमंत्री अुसके अधीन होते थे, अब आवश्यकताके अनुसार बदला जाना चाहिये। संसदके बाहर संस्थाके संगठन-कामकी सुविधाके लिअे दलका अेक कार्याध्यक्ष (chairman) हो सकता है, जो वास्तविक अध्यक्ष (president) यानी प्रधानमंत्रीको रोज-ब-रोजके दफ्तरी कामसे छुट्टी दे और बाहरकी जनता तथा दलके छोटे और आम सदस्योंको सरकारकी नीतियों और अुसके द्वारा अुठाये गये कदमोंका अर्थ समझाये। लेकिन वह शासनमें प्रधानमंत्रीको नियंत्रित नहीं कर सकता। अगर अुसे अैसा लगता हो कि प्रधानमंत्री अयोग्य है या वह कांग्रेसकी नीतियों और प्रस्तावोंके खिलाफ कार्य करता है, तो वह अपनी शिकायत अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीमें पेश कर सकता है। अिस संस्थाको बेशक यह अधिकार है कि वह प्रधानमंत्रीको, अगर अुसने अिस संस्थाका विश्वास खो दिया है तो, अुसके पदसे हटा दे। अैसी हालतमें नया नेता यानी नया प्रधानमंत्री व नया मंत्रि-मंडल चुननेकी आवश्यकता होगी।

यदि पंडित नेहरूको हटाना है, तो यह काम या तो संसदकी कांग्रेस पार्टी कर सकती है या अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी। लेकिन यदि ये दोनों अुन्हें रखना चाहती हैं और यदि अध्यक्षका पद अलग रखा जाता है, तो अिस पदके अधिकारीको अुनके हाथ नीचेके अधिकारीकी हैसियत स्वीकार करनी पड़ेगी और अपना व्यवहार तदनुकूल बदलना पड़ेगा। पिछले वर्ष अध्यक्षीय चुनावके अवसर पर मैंने कहा था:

> "... मैं अैसा सोचता हूं कि प्रतिनिधियोंको प्रमुखके निर्वाचनके अिस सवालको प्रधानमंत्रीके प्रति विश्वास प्रकट करनेके सवालकी तरह देखना चाहिये। यदि वे वर्तमान प्रधानमंत्रीको ही देशका शासन करते रहने देना चाहते हैं, तो अुन्हें अैसा ही प्रमुख चुनना चाहिये जो प्रधानमंत्रीके हाथ मजबूत करे और संभव हो तो अुन्हें प्रेरणा भी दे। और यदि वे अैसा चाहते हैं कि प्रधानमंत्री अपने पदसे हट जायं, तो अवश्य अुन्हें अैसा प्रमुख चुन कर देना चाहिये जो प्रधानमंत्रीको कांटेकी तरह चुभता रहे। (हरिजनसेवक, २६-८-'५०)

मेरे ये विचार आज भी कायम हैं।

परिस्थितिको मैं जैसा समझा हूं, अुससे मुझे लगता है कि सब मिलाकर कांग्रेस अपनी मर्यादायें पूरी तरह पहचानती है। कांग्रेस संस्थाके साधारण जन नेहरूको अुनकी सारी अच्छाअियों और बुराअियोंके साथ चाहते हैं। अुनके गुणोंके लिअे वे अुनका आदर करते हैं और अुनके दोषोंको वे नजर-अन्दाज करते हैं। अेक साठ वर्ष पुरानी संस्थाके लिअे यह परिस्थिति कितनी ही खेदजनक क्यों न हो, वस्तुस्थिति अैसी है कि अ० भा० कांग्रेस कमेटी कोअी दूसरा नाम अैसा नहीं सुझा सकती, जिसके हाथोंमें भारतके प्रधानका पद वह विश्वास और जनताकी संमतिके साथ सौंप सके। वह योग्य

www.vinoba.in

नेताओंकी अेक अटूट परंपरा तैयार नहीं रख सकी, अपनी अिस कमजोरी पर वह अपने ही अूपर नाराज होनेके बजाय जवाहरलालजी पर अिसलिअे नाराज होती है कि वे संस्थाकी ताकतसे बहुत ज्यादा बड़े हो गये हैं।

कांग्रेसके नेताओंको यह काफी अच्छी तरह जानना चाहिये था कि नेहरू और टंडनजीकी आपसमें पट नहीं सकती, यद्यपि व्यक्तिशः दोनों ही सज्जन हैं, आदरणीय हैं। अिन दोनोंको साथ-साथ बांध रखनेकी कोशिश अुन्हें नहीं करनी चाहिये थी। लेकिन अुन्होंने यह प्रयोग किया और अब वे यह महसूस कर रहे हैं कि कांग्रेसका हल बेकाम हो गया है और चल नहीं रहा है। होशियारीका तकाजा है कि अिस गलतीको सुधार दिया जाय।

लोगोंको यह साफ-साफ नहीं बताया गया है कि टंडनजीके खिलाफ नेहरूकी शिकायत क्या है। नेहरूके विचार भली-भांति प्रगट हैं। वे आन्तरराष्ट्रीयताके हामी हैं। वे नहीं चाहते कि भारत दुनियाके दो बलवान गुटोंमें से किसीमें भी शामिल हो। पाकिस्तानके प्रति अुनका व्यवहार गुंडापनके वश न होते हुअे शांति और मित्रता बनाये रखनेका है। वे युद्धके विरोधी हैं। देशमें वे मुसलमानों, अीसाअियों, तथा दूसरी अल्पसंख्यक जातियोंके मित्र हैं और अुन्हें सबसे बड़े और अूंचे हिन्दूसे किसी भी तरह कम दर्जा नहीं देना चाहते। वे किसी साम्प्रदायिक संस्कृतिके पुजारी नहीं हैं, और न यह मानते हैं कि किसी खास जातिका भारतमें बहुमत है, अिसलिअे अुसीकी संस्कृति यहां प्रमुख होनी चाहिये। टंडनजी और अुनके समर्थक प्राचीनपंथी हिन्दुत्ववादी अूपरी वर्गके प्रतिनिधि हैं, और यह कुछ आर्यसमाजी जोशके साथ। सामाजिक रीतियोंके सुधारके सवाल पर वे लोग 'प्राचीन' की ही पूजा करते हैं, और भरसक अपनी प्राचीन रीतियोंको कायम रखना चाहते हैं। नेहरूकी दृष्टि भविष्यकी ओर है, और वे विश्वबंधुत्ववादी हैं। वे भारतकी सरकारके शासक हैं, लेकिन भारतको विशाल दुनियाका अेक हिस्सा ही मानते हैं। अुनकी आंख भारतकी अुस तसवीर पर है, जो सन् २१०० में वह ग्रहण करेगा। वे चाहते हैं कि वे अैसा कुछ करके जायं कि अपने जीवनकालमें भारत दृढ़तापूर्वक अुस मार्ग पर चलने लगे। बहुतेरे हिन्दू नेता, शायद टंडनजी और अुनके साथी भी, सन् ११०० से सन् १९५० तकके अितिहासको भारतके लिअे अपमान, पराजय और निराशाका काल मानते हैं। लेकिन नेहरूके लिअे कोअी भी काल अेकदम निराशा और अंधकारका नहीं था; हरअेक कालमें संघर्ष जरूर था, जैसा कि आज भी है। लेकिन कोअी काल कितना ही दुःखपूर्ण क्यों न रहा हो, संघर्षकी आखिरी परिणति प्रगतिमें हुअी। अुनके लिअे अितिहासका अर्थ सत्ययुगसे कलियुगकी ओर खिसलते जाना नहीं, परंतु निरंतर विकास है, जिसमें मानवता बचपनसे जवानीकी ओर बढ़ती ही जा रही है। मुसलमानोंने कुछ सदियों तक भारतका शासन किया, अिसके लिअे वे अुनसे द्वेष नहीं करते, और न अुनके अिस शासनकी निशानियोंको मिटाना ही चाहते हैं। अिसी तरह अंग्रेजोंके खिलाफ भी, भारत पर अुनके शासनके कारण, अुनके मनमें कोअी द्वेष नहीं है; और न अिन शासकों और वाअिसरॉयोंके नामकी दिल्लीकी सड़कोंके नाम या अंग्रेज राजाओंकी मूर्तियां ही वे मिटाना चाहते हैं। अुनमें 'प्राचीनताकी ओर वापिस जाने' की वृत्तिका कोअी चिन्ह नहीं है। आर्थिक सवालोंके विषयमें वे यंत्रोद्योगवादी और समाजवादी हैं। गांधीजीके चलाये हुअे आर्थिक कार्यक्रमोंमें अुनका विश्वास नहीं है, क्योंकि अुन्हें अुसमें पुराने और परित्यक्त देवताओंकी पूजाका, पुराण-पूजाका शक होता है। जिस दिन अुन्हें यह विश्वास हो जायगा कि सन् १९५१ का चरखा और घानी सन् १७५१ या अुससे पूर्वके चरखा-घानी नहीं हैं, बल्कि दुनियाकी सन् २१०० की अुस भावी तसवीरका निर्माण करनेवाले हैं, जिसे देखनेके लिअे अुनके साथ हम भी अिच्छुक हैं, तो मुझे आशा है कि चरखे और घानीका प्रचार वे हमारी बनिस्बत ज्यादा अुत्साहसे करेंगे। लेकिन यह तो भगवान्के हाथोंमें है।

फिलहाल अुनका आर्थिक दृष्टिकोण हमसे भिन्न है; और जैसा कि सब लोग जानते हैं रचनात्मक कार्यकर्ता अुनके आर्थिक कार्यक्रम और नीतिके कड़े आलोचक हैं।

अिन सब विषयों पर टंडनजी और अुनके साथी अलग ढंगसे सोचते हैं। आन्तरराष्ट्रीय और साम्प्रदायिक सवालों पर अुनमें से कुछने यह जाहिर ही कर दिया है कि वे क्रमशः अंग्रेज-अमरीकी गुट, तथा हिन्दू संस्कृतिकी प्रमुखता और संस्कृत-बहुल भाषाके पक्षमें हैं। आर्थिक दृष्टिसे सब नहीं, तो कअी समाजवादकी अपेक्षा पूंजीवादकी ओर ही ज्यादा झुकते हैं। अुनके वयक्तिक विश्वास और प्रवृत्तियां हमेशा कांग्रेसके घोषित अुद्देश्यों और प्रस्तावोंसे मेल नहीं खातीं। कुछ तो कांग्रेसकी अपेक्षा हिन्दू महासभा या अिसी तरहकी दूसरी संस्थाओंमें हों तो ज्यादा अनुकूल होगा।

कांग्रेस चुनावोंमें विजयी होना चाहती है। फिर वह अपने लिअे जवाहरलालजीकी सेवायें लेना चाहती है या नहीं? यदि वह चाहती है, तो अुसका कर्तव्य है कि वह जवाहरलालजीको अुनके पार्लमेंटरी दलमें अैसे सदस्य न दे, जिनकी राय अहम सवालों पर अुनकी रायसे भिन्न हो। लेकिन अगर अुम्मीदवारोंके चुनावका काम टंडनजी या अुनके जैसे ही विचारवाले लोगोंके हाथमें रहनेवाला है, तो अिसकी बहुत बड़ी संभावना है। जवाहरलालजीके हर बार नाराज होनेकी नौबत आयेगी और अुनसे हर बार कहा जायगा कि वे तानाशाही चला रहे हैं, लोकतंत्रकी पद्धतिके अनुसार नहीं चल रहे हैं। तो अिस परिस्थितिमें नेहरूके प्रति न्याय नहीं है।

बेशक, कांग्रेसको अपनी नीतिको बदलनेका अधिकार है, अगर बहुसंख्यक कांग्रेसी अैसा चाहते हों। अैसी हालतमें अुसे नेहरूसे और अुनके विचारके लोगोंसे साफ कह देना चाहिये कि वे कांग्रेससे चले जायं या अल्पमतमें रहें और बहुमत बनानेकी कोशिश करें। कहनेकी जरूरत नहीं कि नेहरूको प्रधानमंत्रीके पदसे तो अेकदम मुक्त कर ही देना चाहिये।

जवाहरलालजी पर यह आरोप कि वे डिक्टेटर होनेकी कोशिश कर रहे हैं, मुझे बहुत निराधार मालूम होता है। वे राज्यके प्रधान हैं, और सेना तथा पुलिसके प्रमुख हैं, अिसलिअे अगर अुन्हें समय रहते नहीं रोका गया तो वे डिक्टेटर हो जायंगे, यह तर्क मुझे बड़ा अनुदार मालूम होता है। जवाहरलालके बारेमें अैसी किसी संभावनाकी आशंका नहीं की जा सकती। लोकतंत्रकी बात करनेवालोंकी अपेक्षा नहरू लोकतंत्रको ज्यादा अच्छा जानते हैं। मुझे तो अिसके विपरीत दूसरे अंदेशेकी ज्यादा गुंजाअिश मालूम होती है; यानी प्रतिगामी लोग मिलकर अकस्मात् कोअी साजिश करें और अूपरी वर्गके हिन्दुओंका फासिस्टवादी शासन कायम कर डालें। गांधीजीको हिन्दुओंका दुश्मन माना गया था, और हम जानते हैं कि अुन्हें किस तरह हटाया गया।

जैसा कि मैंने पिछले तीन वर्षोंमें कअी बार कहा है, अगर कांग्रेस भविष्यके लिअे अपना निर्माण करना चाहती है, तथा अेक संगठित, अेकमत और सुदृढ़ पार्टीकी तरह रहना चाहती है, और निरंतर प्रगतिशील दृष्टिकोण रखनेकी अिच्छा रखती है, तो मेरी नम्र सलाह है कि अुसे केन्द्रीय सभाके नेता और कांग्रेस-अध्यक्षके पदोंको मिलाकर अेक कर देना चाहिये तथा कांग्रेस-अध्यक्षकी जगह सभापति (chairman) और कार्यकारिणी चुनकर संतोष कर लेना चाहिये। यह सभापति और कार्यकारिणी अुस प्रमुख नेताके अधीन, अुसके लिअे पार्टीका गैर-सरकारी काम करें। यह समिति अिस लक्ष्यको ध्यानमें रखकर बनाना चाहिये कि कांग्रेस विचारधाराका प्रतिनिधित्व करनेमें समर्थ कुशल राजनीतिज्ञों और शासकोंकी अेक दूसरी पंक्ति तैयार रखना है। अिसलिअे अिस समितिमें अैसे ही व्यक्ति होने चाहियें, जिनका दृष्टिकोण महत्त्वपूर्ण प्रश्नों और योजनाओं पर यथासंभव प्रधानमंत्रीके साथ अेक ही हो। अन्यथा परिस्थिति यह होगी कि अेक ओर प्रधानमंत्री और

www.vinoba.in

अुसका मंत्रि-मंडल और दूसरी ओर कांग्रेस-अध्यक्ष और असकी कार्यकारिणी दोनोंमें तनाजा रहेगा तथा देर-अबेर किसी अेकको या तो दबना पड़ेगा या अपने पदसे हटना पड़ेगा।

वर्धा, १-९-'५१ कि० घ० मशरूवाला
(अंग्रेजीसे)

पंचवर्षीय योजनाकी आलोचना

योजना-कमिशनने हालमें ही पहली पंच वर्षीय योजनाका कच्चा मसौदा प्रकाशित किया है। अुसके अनुसार सरकार द्वारा राष्ट्र-विकासके जो विभिन्न कार्य किये जायंगे, अुन पर कुल १७९३ करोड़ रुपये खर्च होंगे। जाहिर है कि यह योजना अेक कीमती दस्तावेज है। अुसमें भारतके पुनर्निर्माणके भिन्न-भिन्न पहलुओंके बारेमें बहुतसी बातें और आंकड़े दिये गये हैं। अिस देशमें अपने ढंगका यह पहला प्रयत्न है और अुसकी जरा भी अुपेक्षा नहीं की जा सकती। योजनाके अिस मसौदेमें आर्थिक प्रगति और सामाजिक विकासके बारेमें कअी आशाप्रद और ठोस बातें दी गअी हैं। अुसमें खेती, ग्रामसुधार, छोटे पैमानेके अुद्योगों और गृहअुद्योगों, बुनियादी शिक्षा तथा राजनैतिक, आर्थिक और शासनिक सत्ताके विकेन्द्रीकरण पर जो जोर दिया गया है, वह सचमुच स्वागतके योग्य है। लेकिन योजनाकी अैसी दूसरी कअी बातें हैं, जिन्हें भारतके राष्ट्रीय पुनर्निर्माणकी दृष्टिसे संतोषप्रद नहीं कहा जा सकता।

पंचवर्षीय योजनाका बुनियादी दोष यह है कि अुसमें हमें भावी आर्थिक विकासकी स्पष्ट तसवीर नहीं मिलती। अेक हद तक यह समझमें आ सकता है, क्योंकि यह योजना अुस कमिशन द्वारा तैयार की गअी है, जिसने कम-ज्यादा अंशमें वर्तमान भारत सरकारकी आर्थिक नीतिका विकास करनेकी बात स्वीकार कर ली है। लेकिन मेरा हमेशा यह दृढ़ मत रहा है कि योजना हमेशा अैसी होनी चाहिये, जिसकी शासनकी बागडोर संभालनेवाली कोअी भी सरकार अुपेक्षा न कर सके और जिसमें लोग अुत्साहपूर्वक सहयोग दे सकें। वह अैसी भी होनी चाहिये कि अेक बार शुरू करनेके बाद लोग खुद ही यथाशक्ति अुसे सफल बनानेमें जुट जायं। अिसलिअे हमारी यह आशा थी कि कमिशन स्वतंत्र भारतके लिअे अेक साहसभरी और निश्चित योजना पेश करनेकी कोशिश करेगा — अैसी योजना जिसका भारतकी मूलभूत संस्कृति और परम्पराके साथ मेल बैठ सके और जो लोगोंको अपनी ओर आकर्षित कर सके। मुझे दुःखके साथ कहना पड़ता है कि यह योजना आम जनताको आजादी और स्वराज्यका प्रकाश महसूस नहीं करा सकती। वह मिश्र अर्थव्यवस्थामें विश्वास रखती मालूम होती है। मिश्र अर्थव्यवस्था आर्थिक पुनर्निर्माणके सिद्धान्तोंकी — जो अकसर परस्पर विरोधी होते हैं — खिचड़ी मात्र होती है, जिसके फलस्वरूप आखिरमें गड़बड़ी ही पैदा होती है। आजकी दुनियामें दो मुख्य आर्थिक विचारधारायें काम कर रही हैं: अेक, पूंजीवादकी; दूसरी, साम्यवादकी। अिन दो विचारधाराओंने अेक दूसरेके खिलाफ युद्ध छेड़ दिया है और अिसके परिणामस्वरूप मानवजातिकी हस्ती ही खतरेमें पड़ गअी है। भारतमें गांधीजीने तीसरी विचारधारा बताअी है, जिसमें अूपरकी दो विचारधाराओंकी अच्छी बातोंका सुन्दर समन्वय हुआ है। दुनियाके प्रसिद्ध विचारक भी अब यह स्वीकार करते हैं कि केवल गांधीवाद ही साम्यवादकी जगह ले सकता है। गांधीजी द्वारा बताअी हुअी जीवन-पद्धति कोअी "सिड़ीपन" नहीं है। वह सामाजिक-आर्थिक पुनर्रचनाका ठोस और वैज्ञानिक नमूना है। अगर पंचवर्षीय योजनामें हमारे देशके लिअे अैसी नअी व्यवस्थाकी कल्पना की गअी होती, तो न सिर्फ भारतके लिअे बल्कि सारी दुनियाके लिअे अुसमें आकर्षक होते हुअे भी व्यावहारिक चित्र पेश किया जा सकता था।

योजनाका दूसरा मुख्य दोष यह है कि अुसमें 'सबको काम देने' के ध्येयको स्वीकार नहीं किया गया है। सारी आधुनिक आर्थिक योजनाओंमें अिस ध्येयको सामने रखा जाता है। भारतका विधान भी हरअेक नागरिकके 'काम करनेके हक' और 'जीवननिर्वाहके पूरे साधन प्राप्त करनेके हक' को स्वीकार करता है। अिसलिअे में अीमानदारीसे यह महसूस करता हूं कि योजना-कमिशनने 'सबको काम देने' के बदले केवल अधिक अुत्पादन पर जोर देकर भारतीय विधानके मूलभूत आदेशका भंग किया है। सच पूछा जाय तो कोअी भी अैसी योजना, जो देशके सारे नागरिकोंको काम देनेकी बातको सबसे पहला स्थान देनेकी कोशिश नहीं करती, योजना ही नहीं कही जा सकती। भारतमें सबको काम देनेके ध्येयको सिद्ध करनेके लिअे यह जरूरी है कि जगह-जगह फैले हुअे छोटे-छोटे ग्रामोद्योगोंको, आर्थिक योजनाकी मूलभूत वस्तु मानकर, अत्यन्त व्यापक पैमाने पर संगठित किया जाय। बुनियादी अुद्योगोंको छोड़कर, जो राज्यके अधिकारमें होने चाहियें और राज्य द्वारा संचालित होने चाहियें, कपड़ा, तेल, शक्कर, कागज, चावल और दियासलाअी सहित अन्य रोजमर्राकी चीजें पैदा करनेवाले सारे अुद्योगोंको छोटे पैमाने पर गांवोंमें संगठित करना चाहिये, ताकि राष्ट्र जनताको काम देनेकी समस्याको ही नहीं, बल्कि अुसे जरूरतसे कम काम मिलनेकी समस्याको भी हल करनेके लिअे 'खेत, कारखाने और वर्कशाप' रख सके। साफ है कि यह योजना साहस और दृढ़ताके साथ अिस बुनियादी चीजका सामना नहीं कर सकी है।

जहां तक राष्ट्रनिर्माणके विभिन्न क्षेत्रोंमें होनेवाले खर्चके ब्यौरेसे संबंध है, योजनामें नदियोंके बांधोंकी 'भव्य' योजनाओं और यातायात तथा डाक-तार व्यवहारके विकासको जरूरतसे ज्यादा महत्त्व दिया गया है। पंचवर्षीय योजनाके पहले भागमें खर्च किये जानेवाले १४९३ करोड़ रुपयोंमें से नहरों और बिजलीकी योजनाओं पर ४५०.२६ करोड़ रुपये खर्च होंगे। आर्थिक विकासकी किसी भी योजनामें सिंचाअीकी सुविधाओं और सस्ती बिजली मुहैया करनेकी बातकी कम कीमत नहीं आंकी जा सकती। परंतु देशके गरीब किसानों और कारीगरोंके लिअे अन्तमें 'सफेद हाथी' सिद्ध होनेवाली लम्बे समयकी केन्द्रित योजनाओं पर राष्ट्र आधार नहीं रख सकता। अिसके बनिस्बत देश भरमें गांव-कुअें, बोरिंग-कुअें, छोटी नहरें, तालाब, बांध वगैरा बनवानेकी विकेन्द्रित योजना बनाअी जाती, तो वह ज्यादा व्यावहारिक और अुपयोगी सिद्ध होती। रेलवे, सड़कों, जहाजरानी और हवाअी यातायातके विकासमें योजनाके अनुसार ३८८.२० करोड़ रुपये खर्च होंगे। अिस भारी रकममें से करीब १०० करोड़ रुपये बचाकर समाजसेवाका ज्यादा अच्छा प्रबन्ध करनेमें अधिक लाभदायक रूपमें खर्च किये जा सकते थे।

बड़े पैमानेके तथा छोटे पैमानेके अुद्योगों और गृहअुद्योगोंके विकासके लिअे १००.९९ करोड़ रुपयेकी रकम नियत की गअी है। अिस रकममें से केवल १६ करोड़ रुपये छोटे पैमानेके अुद्योग-धंधों और गृहअुद्योगोंके लिअे खर्च किये जायंगे। अिसके अलावा, कमिशनका मत है कि, 'गृहअुद्योगों और छोटे पैमानेके अुद्योगोंके कार्यक्रमोंको अुसी तरहके बड़े पैमानेके अुद्योगोंके कार्यक्रमसे अलग करके नहीं देखा जा सकता।' अिसलिअे यह योजना छोटे और बड़े दोनों तरहके अुद्योगोंके 'समान अुत्पादनके कार्यक्रमों' की सिफारिश करती है। अिसका मतलब यह हुआ कि योजना-कमिशन विकेन्द्रित अर्थव्यवस्थाको स्वतंत्ररूपसे कोअी महत्त्व नहीं देता; वह कुछ तात्कालिक लाभों — खासकर पूंजी और पूंजी लगानेके संबंधमें — के खातिर ही गृहअुद्योगोंकी हिमायत करता है।

योजनाके पहले भागमें शिक्षा, स्वास्थ्य, मकानों और दूसरे समाजहित और समाजसेवाके कामोंके लिअे २५४.०८ करोड़ रुपये

www.vinoba.in

रखे गये हैं। यह अुस देशके लिअे सचमुच नाकाफी है, जो दुनियामें अपनी गरीबीके लिअे प्रसिद्ध है और जनकल्याणकारी राज्यका रूप लेना चाहता है। योजनाका शिक्षा संबंधी प्रकरण दुर्भाग्यसे अत्यन्त असंतोषप्रद है। शिक्षा-प्रणालीमें क्रान्तिकारी परिवर्तन किये बिना देशका स्थायी सामाजिक और आर्थिक पुनर्निर्माण संभव ही नहीं है। असलिअे यह आश्चर्यकी बात है कि योजना-कमिशनने अितने महत्त्वकी समस्याको सामान्य चर्चा करके ही अुड़ा दिया। यह जरूरी है कि पंचवर्षीय योजनामें भावी शिक्षण-व्यवस्थाका समग्र चित्र देशके सामने रखा जाय।

योजनामें अर्थप्राप्तिके जिन स्रोतोंकी कल्पना की गअी है, वे किसी भी तरह बहुत निश्चित नहीं कहे जा सकते। योजना यह भी स्वीकार करती है कि सार्वजनिक कर्ज, छोटी बचतों और नये करोंकी अतिरिक्त आय केवल 'कल्पनाकी चीज' है। आजकी आर्थिक परिस्थितियोंको देखते हुअे कमिशनकी आशाओंके अुचित होनेमें बड़ी शंका है। अगर ये आशायें पूरी हो जायं, तो भी पांच वर्षोंमें ३७५ करोड़ रुपयेकी कमी रहेगी। कमिशनने २९० करोड़की कमी पूरी होनेकी शक्यता बताअी है। असिसे भारतके अर्थतंत्र पर निश्चित रूपसे बोझ पड़ेगा, क्योंकि यह मुद्राप्रसारको जन्म देगा। योजनामें आगे कहा गया है कि "अगर विकासके कामोंके खर्चके लिअे विदेशी मदद मिल जाय, तो पौंड पावना (sterling balances)का अुपयोग रोजमर्राके अिस्तेमालका सामान बाहरसे मंगाने और देशके भीतरके अूंचे भावोंको नीचे लानेमें किया जा सकता है।" पौंड पावनाका अिस तरहका अुपयोग बड़ा असंतोषकारक मालूम होता है।

योजना कंट्रोलोंकी समस्याको विश्वासजनक रूपमें पेश नहीं करती। बड़े आश्चर्यकी बात है कि कमिशन यह सोचता है कि अगर — और यह 'अगर' बहुत बड़ा है — कंट्रोलों पर कुशलतासे अमल किया जाय, तो वे 'समाजका नैतिक स्तर अूंचा अुठा सकते हैं।' क्या आजके शासन-तंत्रसे हम अिस चमत्कारकी आशा रख सकते हैं? खाद्य-नीतिके संबंधमें कमिशनका कहना है कि अगले कुछ वर्षोंमें लगभग ३० लाख टन अनाज मंगानेकी योजना बनानी चाहिये, और आगे जोड़ता है कि असाधारण वर्षोंमें अिससे ज्यादा मात्रामें भी अनाज मंगाना पड़ सकता है। तो राष्ट्रीय स्वावलंबनके जिस कार्यक्रमका अितना ढिंढोरा पीटा गया है, अुसका यह चमकीला चित्र है!

योजनाके दूसरे भी कअी पहलू हैं, जिन पर यहां विस्तारसे चर्चा की जा सकती है। लेकिन स्थानाभावका विचार मुझे अैसा करनेसे रोकता है। फिर भी अेक बुनियादी सवालका जवाब दिया ही जाना चाहिये। अिस पंचवर्षीय योजनाका भविष्य क्या है? योजना-कमिशन अभी तक अेक मसौदा ही प्रकट कर सका है। केन्द्रीय सरकारके मंत्रियों, राज्योंकी सरकारों, अुनकी अपनी-अपनी सलाहकार-समितियों और संसदके सदस्योंके साथ 'और सलाह-मशविरा' करनेके बाद ही अिस मसौदेको अन्तिम रूप दिया जा सकेगा। अैसा करनेमें स्वभावतः महीनों लग जायंगे। अिस बीच देश चुनावोंकी सरगर्मीमें फंस जायगा। आम चुनावोंके बाद केन्द्रीय सरकार और राज्योंकी सरकारोंमें राजनैतिक पार्टियोंकी ताकतमें घट-बढ़ होगी और अिस कारणसे शायद योजना-कमिशनके सदस्योंमें भी फेरबदल करनेकी जरूरत पड़े। अिसके फलस्वरूप योजनामें शायद फिर फेरबदल हो और फिरसे सलाह-मशविरेका चक्र शुरू हो। अिस तरह दुर्भाग्यसे यह योजना लम्बे समय तक कागज पर ही रहेगी। और संभव है अुस पर कभी न खतम होनेवाली चर्चायें ही चलती रहें। अिसके बजाय अगर अुसे अन्तिम रूप देकर भारतकी स्वतंत्रताकी चौथी वर्षगांठ पर (१५ अगस्त, १९५१) पूरी गंभीरतासे अुसका अमल शुरू हो जाता, तो जमीन-आसमानका फर्क हो जाता।

(अंग्रेजीसे) श्रीमन्नारायण अग्रवाल

विनोबाका अुत्तरी प्रवास

जैसा कि अखबारोंमें जाहिर किया गया है, विनोबा कल सुबह अुत्तर दिशाकी तरफ अपनी पैदल यात्रा शुरू करेंगे। अगर कोअी असाधारण बात न हुअी, तो वे अक्तूबरके अन्त तक दिल्ली पहुंच जानेकी आशा रखते हैं।

रवाना होनेसे पहले अुन्होंने स्थानीय कार्यकर्ताओंके लिअे दो कार्यक्रम शुरू किये — १. वर्धा और अुसके आसपासके २५ गांवोंमें जोरोंसे रचनात्मक काम करना, और २. बेजमीन गरीबोंमें बांटनेके लिअे भूमिदान प्राप्त करना।

आज दोपहरको पवनारमें विनोबाने वर्धा और आसपासके गांवोंके बड़े जनसमुदायके सामने भाषण करते हुअे रचनात्मक कामकी तफसील समझाअी और भूमिदान-यज्ञमें अपनी भेंट देनेके लिअे अुनसे अपील की। अिस कामकी व्यवस्था करनेके लिअे अेक छोटीसी कमेटी बनाअी गअी, जिसका अध्यक्ष मैं खुद, अुपाध्यक्ष श्री जाजूजी और सदस्य श्री ठाकुरदास बंग हैं। विनोबाने लोगोंके हितके लिअे और अुनके सहयोगसे संगठित किये जा सकनेवाले रचनात्मक कामके कुछ अुदाहरण पेश किये। अुन्होंने शहरों और गांवोंकी गन्दगीका वर्णन किया और सफाअीके महत्त्व पर जोर दिया। साथ ही अुन्होंने सहकारी समितियों और बुनियादी शिक्षाका भी सुझाव रखा।

विनोबाने कहा कि तेलंगानाके मेरे अनुभवने दूसरी जगह भी लोगोंसे भूमिदान मांगनेके लिअे मेरी हिम्मत बढ़ा दी है। अुत्तर दिशाकी यात्रामें यह चीज मेरे कामका अेक अंग ही बननेवाली है। मैं चाहता हूं कि वर्धा जिलेके लोग अिस दिशामें शुभ प्रारंभ करके मेरे मिशनको आशीर्वाद दें। अिससे अपनी यात्रामें मैं लोगोंसे जमीन देनेकी जो अपील करूंगा, अुसे बल मिलेगा। पवनारकी सभामें लगभग ६०० अेकड़ भूमिके दानकी घोषणा की गअी। यह याद रखना चाहिये कि वर्धा तेलंगानाकी तरह बड़े जमींदारोंका प्रदेश नहीं है। असलिअे बहुत बड़े दानोंकी आशा नहीं रखी जा सकती थी। सबसे बड़ा दान १०० अेकड़ भूमिका और सबसे छोटा डेढ़ अेकड़ भूमिका है। अेक खोजा जमींदारने, जो अपनी सारी जमीन बेच देना चाहता था, विनोबाके मिशनकी बात जानकर अपना अिरादा बदल दिया और सारी जमीन — ६५ अेकड़ — विनोबाको दे दी।

प्रसंगवश पाठकोंको यह जानकर खुशी होगी कि विनोबाने आज अपना ५६ वां वर्ष पूरा किया है।

वर्धा, ११-९-'५१ कि० घ० मशरूवाला
(अंग्रेजीसे)

विषय-सूची

		पृष्ठ
विनोबाकी तेलंगाना-यात्रा — १	दा० मूं०	२४९
शिवरामपल्लीमें विनोबा — १३	दा० मूं०	२५०
टंडनजीका अिस्तीफा	कि० घ० मशरूवाला	२५२
अंग्रेजीको नमस्कार	मगनभाअी देसाअी	२५२
स्पष्टीकरण	कि० घ० मशरूवाला	२५३
नेहरू-टंडन विवाद	कि० घ० मशरूवाला	२५३
पंचवर्षीय योजनाकी आलोचना	श्रीमन्नारायण अग्रवाल	२५५
विनोबाका अुत्तरी प्रवास	कि० घ० मशरूवाला	२५६
टिप्पणी:		
नवजीवनके प्रकाशन	जी० देसाअी	२५०

www.vinoba.in